Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on **"_ नेपोलियन I**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

नेपोलियन।

1789 ई. में फ्रांस में क्रांति हुई। इस क्रांति ने एक विश्व पुरूष को जन्म दिया जिसे नेपोलियन बोनापार्ट के नाम से जाना जाता है। नेपोलियन ने अपने साहस एवं कार्यों से फ्रांस के प्रधान सेनापति का पद प्राप्त किया। तत्पश्चत् वह डायरेक्ट्री के शासन में चयनित हुआ। तत्पश्चात् नेपोलियन के समर्थित सदस्यों ने डायरेक्ट्री शासन का अंत करके कॉंसुलेट शासन की स्थापना की। इनमें 3 कॉंसुल नियुक्त हुए जिनमें प्रधान नेपोलियन था। प्रथम कॉंसुल बनने के बाद नेपोलियन के समक्ष बहुत कठिनाइयाँ थीं परन्तु उसने बड़ी योग्यता से इन समस्याओं को हल किया। इससे नेपोलियन की लाके प्रियता में अभतू पूर्व वृद्धि हुई ओर अंतत: 1804 ई. में सीनेट ने नेपोलियन को फ्रासं का सम्राट घोषित कर दिया।

सम्राट के रूप में नेपोलियन ने कई युद्ध लड़े और फ्रांस को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में इंग्लैंड के समकक्ष लाकर खड़ा कर दिया। इंग्लैंड की आर्थिक शक्ति को कमजोर करने के

लिए नेपोलियन ने महाद्वीपीय प्रणाली लागू की किन्तु अंतत: असफल हुआ किन्तु इससे इंग्लैंड के साथ फ्रांस के संबंध अत्यतं कटु हो गये और अब इंग्लैंड ने अन्य यूरोपीय राज्यों के साथ मिलकर नेपोलियन के पतन की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने विजय अभियान से समस्त यूरोपीय मानचित्र को परिवर्तित कर दिया था। अत: नेपोलियन की विजयों से उत्पन्न राजनीतिक समस्याओं एवं परिवर्तनों का समाधान करने के लिए ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना में एक कांग्रेस का आयोजन किया गया जिसे वियना कांग्रेस कहा जाता है। वियना कांग्रेस के निर्णयों को जारी रखने की दिशा में क्रमश: यूरोप की संयुक्त व्यवस्था एवं पवित्र मैत्रीसंघ की स्थापना की गई किन्तु ये व्यवस्थायें असफल रहीं। नेपोलियन बोनापार्ट के पतन के बाद यूरोप के इतिहास में 1815 ई. से 1848 ई. के बीच का युग मैटरनिख युग के नाम से जाना जाता है। मैटरनिख घोर प्रतिक्रिया वादी व्यक्ति था अर्थात् वह किसी भी परिवर्तन का घोर विरोधी था।

इसी बीच यूरोप में 1830 ई. एवं 1848 ई. में कई देश में

क्रांतियाँ हुई जिनके परिणाम दूरगामी सिद्ध हुए।

References: Internet & Competitive books.